पुस्तकालय से पत्रिका तक...

अरविंद कुमार सिंह

अपनी कक्षा के बच्चों की पढ़ने-लिखने की क्षमताओं को निखारने के लिए, उनमें पढ़ने-लिखने को लेकर आत्मविश्वास पैदा करने के लिए लेखक ने दीवार पत्रिका पर काम किया। इस पत्रिका पर काम की शुरुआत में वक़्त लगा, लेकिन धीरे-धीरे जो अपेक्षित था वह सबकुछ होने लगा। बच्चों ने पुस्तकालय जाना, किताबों को पढ़ना सीखा और धीरे-धीरे वे पत्रिका को एक रूप देने में भी कामयाब हुए। बच्चों ने न केवल यह जाना कि उन्हें रचनाएँ लिखनी हैं, बल्कि कुछ हद तक यह भी कि एक पत्रिका के प्रकाशन के लिए क्या-क्या तैयारियाँ करना होती हैं। -सं.

सन्दर्भ

इस माह हमने अपने विद्यालय की पहली दीवार पत्रिका *उड़ान* का प्रकाशन किया। यह दीवार पत्रिका 'दीपावली विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हुई। इस पत्रिका हेतु विद्यार्थियों द्वारा बेहद सुन्दर लेख लिखे गए एवं चित्र बनाए गए। आगे हम दीवार पत्रिका के प्रकाशन में आने वाली चुनौतियों, इसके उद्देश्यों, इसकी तैयारी के विभिन्न भागों पर विस्तार से चर्चा करेंगे। हम जानेंगे, कैसे छोटे-छोटे बच्चों से इतने सुन्दर लेख लिखवाए जा सकते हैं।

दीवार पत्रिका से पहले

दीवार पत्रिका के बारे में बताने से पूर्व, मैं आपको आज से लगभग डेढ़ साल पीछे ले चलूँगा। आपको बताऊँगा कि कक्षा शिक्षण के दौरान आई एक समस्या, कैसे एक दीवार पत्रिका के रूप में समाधान बनकर उभरी।

भाषा शिक्षण के दौरान कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की कक्षा में सहभागिता का अवलोकन करने पर यह एक समस्या सामने आई कि विद्यार्थी कहानी / कविता / जीवनी को सुन तो लेते हैं, लेकिन जब उनसे उसके विषय में चर्चा करने के लिए कहा जाता है, वे बचते हैं। यहाँ तक कि छोटे-से-छोटे प्रश्नों का उत्तर देने से भी बचने के लिए, नज़र तक नहीं मिलाते कि कहीं सर मुझसे उत्तर न पूछ लें। इस कार्य में नगण्य सहभागिता के साथ ही अधिकांश बच्चे लिखने में रुचि नहीं लेते हैं। कुल मिलाकर, कक्षा शिक्षण उनके लिए बोझिल बनता जाता है, और वे धीरे-धीरे शैक्षणिक रूप से पिछड़ जाते हैं। एक कक्षा में विभिन्न अधिगम स्तर एवं रुचियों

वाले विद्यार्थी पढ़ते हैं। कक्षा शिक्षण के दौरान मैंने देखा है कि कुछ बच्चे पढ़ने में बहुत अच्छे नहीं होते, लेकिन चित्र बहुत सुन्दर बना लेते हैं। मैंने सभी को समाहित करते हुए कक्षा में भाषा शिक्षण को रुचिपूर्ण बनाने के लिए गतिविधियों के समूह का इस्तेमाल किया।

शुरुआत भाषा के किसी पाठ को कक्षा में अच्छे से पढ़कर सुनाने से की गई। इसके बाद उन्हें जो पढ़कर सुनाया गया है, उससे सम्बन्धित किसी घटना, पात्र, उससे सम्बन्धित घटना या किसी अन्य काल्पनिक घटना का स्वतंत्र चित्र बनाने का अवसर दिया गया। इसके साथ ही, उन्हें अपनी रुचि के अनुसार रंग भरने का मौक़ा भी दिया गया।

कक्षा में हुए कार्य का एक उदाहरण है 'क़िस्सा जूते का' कहानी पढ़ने का। कहानी इस प्रकार है :

मगरमच्छ बस झपकी लेने ही वाला था कि उसके सिर पर एक जूता आ टपका! "यह जूता किसका है?" वह चिढ़कर बोला। मगरमच्छ ने दिमाग़ लगाया।

"कहीं यह जूता मेंढक का तो नहीं!" "क्या यह तुम्हारा है, मेंढक?" मगरमच्छ ने ग़ुस्से में पूछा। "नहीं, मेरा पैर तो इस बड़े जूते के लिए बहुत छोटा है।" मेंढक झिझकते हुए बोला। "ऐसा है क्या!" यह कहकर मगरमच्छ वहाँ से चला गया।

अब उसने ज़रा और ध्यान से सोचा। "यह जूता ज़रूर शतुरमुर्ग का होगा!" मगरमच्छ ने शतुरमुर्ग को पुकारा, "यह रहा तुम्हारा जूता!" 'मगर मेरा पैर तो इस चौड़े जूते के लिए बहुत बड़ा है।" शतुरमुर्ग घबराकर बोला। "ऐसा है क्या? उफ़्फ़...!"

मगरमच्छ का ग़ुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। "यह जूता ज़रूर किसी ख़रगोश का होगा!" "किसका है यह जूता?", मगरमच्छ ज़ोर से चिल्लाया। सभी ख़रगोश काँपते हुए स्वर में बोले, "नहीं-नहीं, हमारे पैर इस जूते के लिए बहुत लम्बे हैं। यह हमें कभी पूरा नहीं आएगा।"

"यह जूता किसी का तो होगा!" ग़ुस्से से लाल-पीला मगरमच्छ वहाँ से चला गया। तभी, एक साँप वहाँ से रेंगता हुआ गुज़रा। मगरमच्छ फिर चिल्लाया, "साँप! यह जूता तुम्हारा है न?" साँप हकलाया, "म... म... म... मगर... मेरे तो पैर ही नहीं हैं।"

मगरमच्छ शर्मिन्दा होकर वहाँ से भाग उठा। वह समझ नहीं पा रहा था कि जूता आख़िर फेंका किसने। "बस एक बार पता लग जाए कि जूता किसने फेंका है, फिर बताता हूँ।" तिलमिलाया मगरमच्छ बोला। उसी समय एक शेर उसकी ओर लपका। "मैं एक जूते की तलाश में हूँ।" शेर ने कहा। "क्या तुमने मेरा जूता कहीं देखा है?" मगरमच्छ ने अपने कन्धे झटकाए। "मैंने तो आज सुबह से कोई जूता नहीं देखा।" अब वह इस जूते का आख़िर करे क्या? ख़ैर, मगरमच्छ ने सोचा, "किसी ने मुझपर फेंका था..." और वह गया जूता हवा में उड़ता हुआ। "आह..." भालू कराहा, "यह जूता कहाँ से आया?"

इस कहानी को पढ़कर सुनाने के उपरान्त हमने विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से चित्र बनाने को कहा, जो इस प्रकार हैं :—

बच्चों के चित्र

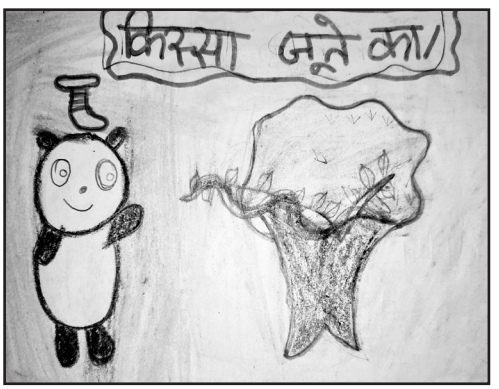

हम देख सकते हैं कि बच्चों ने विभिन्न जानवर, पेड़ों, जूता एवं जलीय जीवों के चित्र बनाए। वे सभी चीज़ें जो कहानी में थीं, काग़ज़ पर चित्र के रूप में आ गईं।

कहानी के बाद पहली गतिविधि में हम बच्चों को स्वतंत्र रूप से चित्र बनाने का मौक़ा देते हैं। उसके बाद उनको अपने बनाए गए चित्र पर चर्चा करने के लिए बारी-बारी से आमंत्रित किया जाता है। उनसे यह जानने का प्रयास किया जाता है कि यह चित्र पढ़े गए पाठ या उसके किसी पात्र से किस प्रकार जुड़ा है; उनके द्वारा बनाए गए चित्र में वह क्या बताना चाह रहे हैं; उन्होंने यह चित्र क्यों बनाया और बनाए गए चित्र के माध्यम से वह क्या कहना चाहते हैं; आदि।

इसी प्रकार के प्रश्नों पर बोलने के लिए उसे कक्षा के सामने आमंत्रित किया जाता है। कभी-कभी पीयर टीम (जोड़े बनाकर) विद्यार्थियों को अभिनय / रोल प्ले करने का मौक़ा भी दिया जाता है।

अन्तिम चरण में विद्यार्थियों ने जो भी चित्र बनाया है या जो अभिनय किया अथवा जो भी बोला है, उसको अपनी भाषा में लिखने के लिए बोला जाता है। विद्यार्थी अपनी क्षेत्रीय एवं मानक भाषा का समावेश करते हुए अपनी बात लिखते हैं।

बच्चों का लेखन

इसके बाद से मेरी कक्षा के विद्यार्थियों में सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन यह आया है कि अब भाषा के किसी पाठ के ख़त्म होते ही वे गतिविधि के माध्यम से उसके कुछ हिस्से को प्रदर्शित करने के लिए उत्साहित रहते हैं।

मुझे लगता है कि चित्र बनाकर एवं बोलकर उनकी कल्पनाशीलता, तर्कशक्ति, आदि का विकास हो रहा है। अभिनय करने से उनका कक्षा में अपनी बात रखने का आत्मविश्वास बढ़ रहा है। विद्यार्थियों को लिखकर अपनी-अपनी बात क्षेत्रीय अथवा मानक भाषा में बताने के पर्याप्त अवसर मिल रहे हैं। भाषा शिक्षण के दौरान उनकी सहभागिता बढ़ रही है।

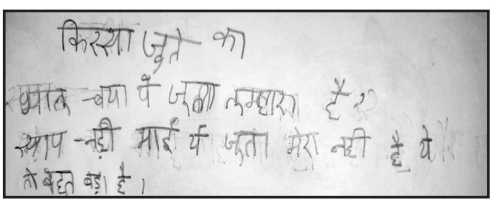

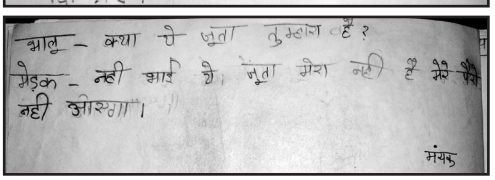

यह काम लम्बे समय तक करने के उपरान्त बच्चे नि:संकोच अपनी बात रखने लगे। बच्चों को नित-नई गतिविधि करने के लिए कहानी की आवश्यकता पड़ती थी, और कहानी के लिए पुस्तक व पुस्तक के लिए पुस्तकालय की। कहानी और कविता पढ़ना उनके लिए रुचिपूर्ण कार्य हो गया। कक्षा शिक्षण के दौरान पुस्तकालय का प्रयोग विद्यार्थी समान्तर रूप से करने लगे, क्योंकि लम्बे समय से वो कहानियाँ पढ़ रहे थे। अब समय था, उनकी अभिव्यक्ति को लेखन विधा के माध्यम से अगले चरण में ले जाने का।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम सबने (बच्चों एवं मैंने) निर्णय लिया कि अब हम अपने लेखों को किसी विशेष शीर्षक-आधारित लिखेंगे। इस प्रकार, हमारी पत्रिका *उड़ान* का उदय हुआ। इस दीवार पत्रिका का एक मुख्य उद्देश्य था, बच्चों की रचनात्मकता के लिए एक स्वतंत्र मंच प्रदान करना। दीवार पत्रिका के दौरान बच्चों को समूह में कार्य करने के अवसर प्राप्त होते हैं, और यह उनको मौलिक अभिव्यक्ति करने के पर्याप्त अवसर प्रदान करती है। सभी बच्चों को अपने लेखन कौशल का प्रदर्शन करने एवं स्वतंत्र रूप से चित्र बनाने का मौक़ा मिलता है।

पत्रिका का नामांकन

किसी भी पत्रिका को बनाने से पूर्व उसका नाम रखा जाता है। यह भी बड़ी मज़ेदार प्रक्रिया रही। बहुत-से नाम बोले गए। लगभग हर बच्चे ने कोई-न-कोई नाम सुझाया। इस दौरान, पतंग, संसार, आसमान, आकाश, जगत, 'उड़ान', चिड़िया, तारे, समुद्र, सूरज, सूरजमुखी, चाँद, आदि नाम सुझाए गए। विद्यार्थियों द्वारा सुझाए गए नामों पर विस्तार से चर्चा की गई। चर्चा के दौरान, विद्यार्थी ऐसा कोई नाम रखना चाहते थे जिसका दायरा बड़ा हो, अर्थात जिसकी कोई सीमा न हो। एक लेखक के सोचने की कोई सीमा नहीं होती है। पत्रिका में लिखे लेख बच्चों की कल्पनाओं की 'उड़ान' हैं, इसलिए पत्रिका का नाम उड़ान रखने पर सहमति बनी।

हैडर का निर्माण

अगला क़दम था पत्रिका के लिए हैडर बनाना, जो आकर्षक हो और प्रभाव छोड़े। हर पत्रिका के नाम के साथ हैडर जुड़ा होता है, जो उसकी पहचान बनता है। अतः *उड़ान* के लिए भी हैडर का निर्माण किया गया। इस पत्रिका का हैडर है– 'उड़ान : बच्चों की दीवार पत्रिका'। हैडर छोटे रूप में इस पत्रिका का मूल भाव व्यक्त करता है।

विषय निर्धारण

पत्रिका में लेख किस विषय पर लिखे जाएँगे, यह सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है। विषय ऐसा होना चाहिए जो बच्चों की समझ में आसानी से आ जाए। हमारी पत्रिका का निर्माण हमने दीपावली से पूर्व वाले माह में किया था, सो हमने पत्रिका का विषय 'दीपावली' रखा, और दीवार पत्रिका 'दीपावली विशेषांक' के रूप में प्रकाशित की गई। दीपावली एक ऐसा विषय था जिसके बारे में सभी जानते हैं। चूँकि बच्चों की पुरानी यादें भी इससे जुड़ी हैं, इसलिए उन्हें अपनी बात लिखने में आसानी रही, और अधिक-से-अधिक बच्चों ने बढ़-चढ़कर लिखा।

एफ़एलएन कार्यक्रम के तहत मुझे भी *बॉस, कभी भी कहीं भी* और पाठ्यपुस्तक *वाटिका, मैं ए टी एम हूँ*, आदि आत्मकथाएँ पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। सभी विद्यार्थियों को आत्मकथा लेखन विधा पर काम करने का अवसर प्राप्त हो, इसलिए दूसरा अंक 'आत्मकथा विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया गया।

इसके अलावा, कुछ अन्य विषय भी लिए जा सकते हैं। यथा–

1. कहानी पर चर्चा से;
2. आसपास के परिवेश से, जैसे– त्योहार, पास-पड़ोस, बारात, आदि;
3. घटनाओं से, जैसे– बाढ़, भूकम्प, आदि;
4. विधाओं पर आधारित, जैसे– साक्षात्कार, पत्र लेखन, यात्रा वृत्तान्त, आत्मकथा, आदि;
5. किसी रचनाकार को केन्द्र में रखकर;
6. भाववाचक विषयों पर, जैसे– मदद, सीखना, खोज, आदि।

विषय निर्धारण के लिए विद्यार्थियों से भी चर्चा की जा सकती है, अथवा विद्यार्थियों को कई सारे टॉपिक देकर उनमें आम सहमति भी बना सकते हैं।

पत्रिका तैयार करने में विद्यार्थियों की अहम भूमिका होती है। वे ही पत्रिका में छपने वाली सामग्री लिखते हैं, और फिर लिखी गई रचनाओं व चित्रों को संकलित करते हैं। इसके बाद, वे प्राप्त रचनाओं एवं चित्रों को चार्ट पर चिपकाते हैं, और चार्ट की सजावट व किनारों पर आलेखन या डिज़ाइन बनाकर सुन्दर रूप देते हैं।

सम्पादकीय एवं सम्पादक मण्डल का गठन

अभी मैं ही सम्पादक की भूमिका निभा रहा हूँ। लेकिन अगले कुछ अंकों के प्रकाशन के उपरान्त छात्रों को सम्पादक की भूमिका दी जाएगी। कुछ छात्रों को सम्पादक मण्डल के सदस्यों के रूप में नामित किया जाएगा, जो लेखों और चित्रों को पत्रिका के लिए छाँटेंगे।

इसी प्रकार, छोटे-छोटे कार्यों को विभाजित कर सम्पादक मण्डल का भी गठन किया जाएगा, जो लेखों की छँटनी करने में मदद करेगा। अभी भी हमारी पत्रिका के लिए आए सभी चित्रों को छात्रों की मदद से ही चुना जाता है।

दीवार पत्रिका लगाते समय कुछ बातें, जिनपर सहमति बनी कि ये पत्रिका में होंगी, हैं :

प्रकाशन तिथि, वर्ष, अंक, आदि सूचनाएँ;

सम्पादक मण्डल का नाम, और सम्पादकीय पत्रिका के बाएँ कोने में होगी;

सभी रचनाएँ सुन्दर तरीक़े से सजाकर और बॉर्डर बनाकर लगाई जाएँगी;

पत्रिका का एक बॉर्डर होगा; और

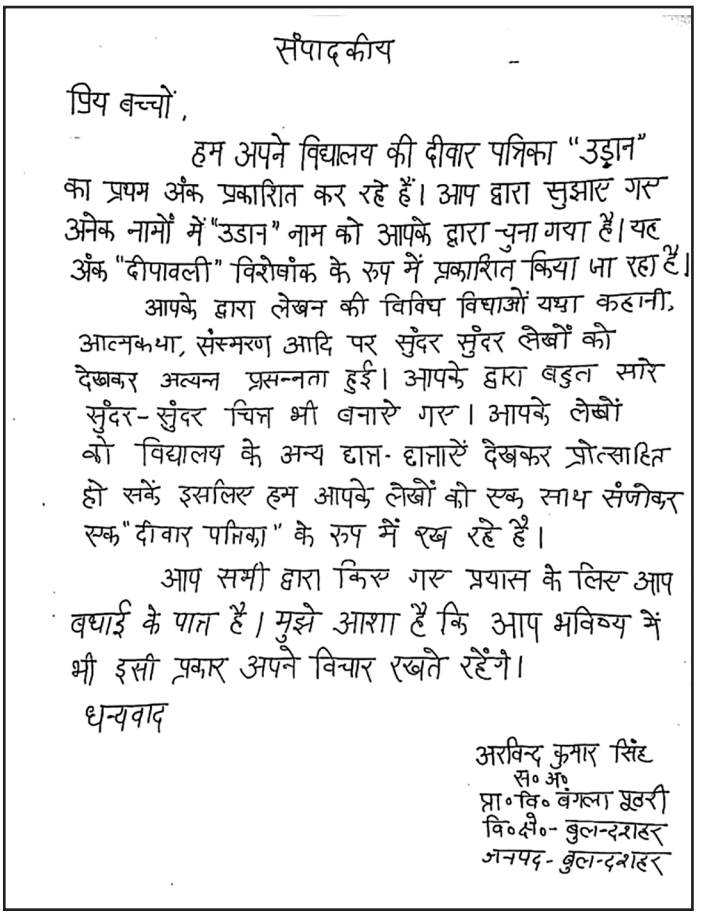

संपादकीय

प्रिय बच्चों,

हम अपने विद्यालय की दीवार पत्रिका "उड़ान" का प्रथम अंक प्रकाशित कर रहे हैं। आप द्वारा सुझाए गए अनेक नामों में "उडान" नाम को आपके द्वारा चुना गया है। यह अंक "दीपावली" विशेषांक के रुप में प्रकाशित किया जा रहा है।

आपके द्वारा लेखन की विविध विधाओं यथा कहानी, आत्मकथा, संस्मरण आदि पर सुंदर सुंदर लेखों को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आपके द्वारा बहुत सारे सुंदर-सुंदर चित्र भी बनाये गए। आपके लेखों को विद्यालय के अन्य छात्र-छात्राऐं देखकर प्रोत्साहित हो सकें इसलिए हम आपके लेखों को एक साथ संजोकर एक "दीवार पत्रिका" के रुप में रख रहे हैं।

आप सभी द्वारा किए गए प्रयास के लिए आप बधाई के पात्र हैं। मुझे आशा है कि आप भविष्य में भी इसी प्रकार अपने विचार रखते रहेंगे।

धन्यवाद

अरविन्द कुमार सिंह
स० अ०
प्रा०वि० बंगला पूठरी
वि०क्षे०- बुलन्दशहर
जनपद- बुलन्दशहर

पत्रिका का नाम सुन्दर अक्षरों में लिखा जाएगा।

पत्रिका में सभी बच्चों की भागीदारी है, फिर भी इसका बहुत-सा काम अभी मेरे ज़िम्मे ही है, धीरे-धीरे बच्चे यह भूमिका भी सँभाल लेंगे। अभी भी मैं जो करता हूँ, उसमें भी बच्चों की काफ़ी मदद मिलती रहती है। पत्रिका बन जाए, इसके लिए आवश्यक काम बच्चों के स्तर अनुसार विषय (टॉपिक) का चयन, उसके अनुसार उन्हें शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध कराना, और चुने गए विषय पर कक्षा में चर्चा करना है। मैं उन्हें निरन्तर पुस्तकालय का प्रयोग करने और स्वतंत्र लेखन के लिए प्रेरित करता रहता हूँ। आख़िर में, मैं सम्पादक की भूमिका के निर्वाह के साथ वर्तनी अशुद्धियों पर भी कार्य करता हूँ।

इस कार्य में कुछ सावधानियाँ भी रखनी होती हैं। एक तो यही, कि लिखते समय बच्चे एक दूसरे के लेख ज़्यादा न पढ़ें न ही लेखों के विचार साझा करें। किसी के लिखे पर बेहद नकारात्मक टिप्पणी न करें। यह भी कोशिश है कि धीरे-धीरे वर्तनी की अशुद्धि कम हों, व मौलिक ही लिखा जाए। यहाँ-वहाँ से देखकर न लिखें। पत्रिका में छापते समय इसका ध्यान रखने के साथ यह भी देखना होता है कि किसी भी लेख में जाने-अनजाने किसी धर्म, जाति, सम्प्रदाय पर या निजी टिप्पणी न चली जाए। मुझे लगता है, इस पूरे प्रयास से मेरी भाषा की कक्षा का माहौल बदला है, और बच्चों की लेखन क्षमता व आत्मविश्वास में काफ़ी विकास हुआ है।

अरविंद कुमार सिंह उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, ज़िला बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश में विगत 7 वर्षों से सहायक अध्यापक के पद पर कार्य कर रहे हैं।

सम्पर्क : arv.kiet2011@gmail.com